v t c&x t c

गीता धर्मराजन

चित्रांकनः अतनु रॉय

यह किताब

....

की है।

dFkk ds fo"k; esa

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनोमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities." — **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]." — **Papertigers**

Copyright © KATHA

v t c&x t c

गीता धर्मराजन

चित्रांकनः अतनु रॉय

KATHA

Copyright © KATHA

एक दिन विकासपुर गांव का सरपंच जिश्नू अपने खेत में घूम रहा था। तभी उसे एक अजीब सा पत्थर दिखा। उसने उसे हाथ में उठा लिया। वह सूरज की तरह चमक रहा था।

''मैं? मैं ... जिश्नू गिड़गिडाया।''

'मेरा मतलब, ''मुझे नहीं चाहिए।'

''नहीं ...? तुम्हें नहीं?'

''नहीं ... मेरा

'मतलब ... मर्द कहीं बच्चे को जन्म दे सकता है?'

''मैं सूर्य देव हूँ,'' एक धीमी आवाज़ ने पत्थर के भीतर से कहा। ''तुम क्या चाहते हो?''

जिश्नू का कोई बेटा नहीं था। ''हे प्रभू! मुझे एक बेटा दो!'' बस इतना कहते ही जिश्नू का पेट फूलने लगा।

सूर्य देव हँस पड़े। वे बोले, ''विष्णु देवता भी तो स्त्री का रूप लेकर मोहिनी बने थे। अब तुम्हारी बारी है।'

बस खबर चारों ओर फैल गई।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

''ओह हो। जब मीतू होने वाली थी, तब तुम कैसे नखरे करती थीं,'' जिश्नू ने अपनी पत्नी रानू से कहा। पर जब कुछ महीने बीते तब जिश्नू सोचने लगा कि रानू ऐसे में इतना काम कैसे कर लेती थी।

''ओफ़! हाय, मैं तो मर रहा हूँ।'' जिश्नू बोला।

Copyright © KATHA

जिश्नू ने विकासपुर गाँव की पंचायत की बैठक बुलाई। शहर से डॉक्टर साहिबा भी आयीं। एक बुजुर्ग ने कहा, ''हमारे देश में रोज़ सैकड़ों

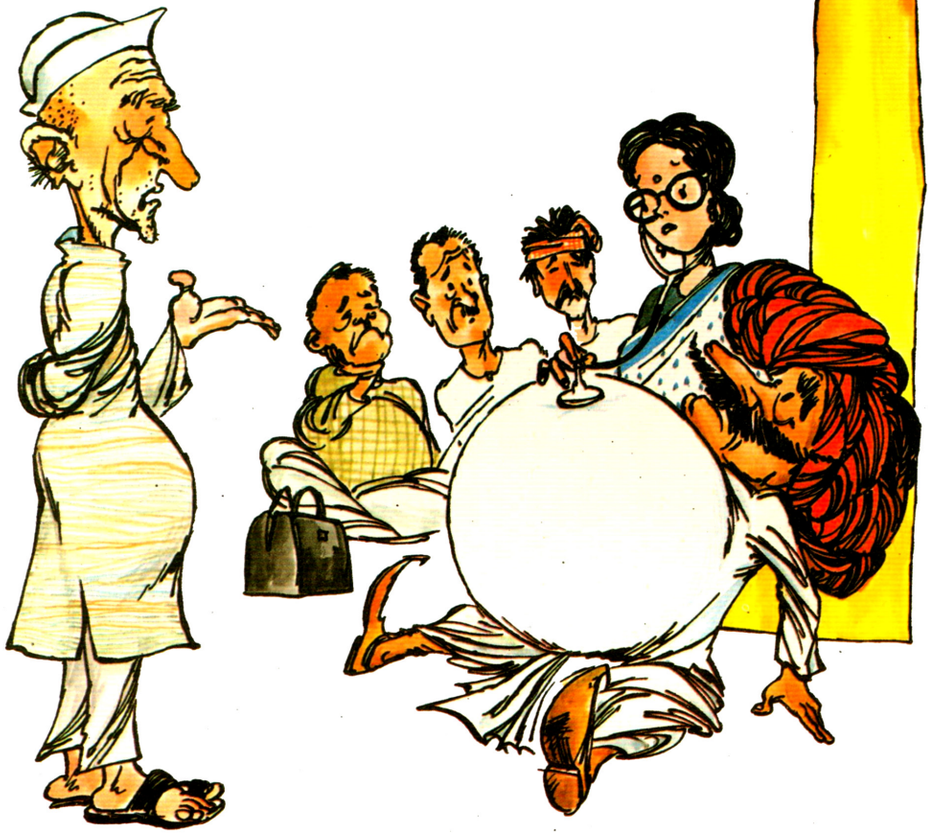

स्त्रियाँ ... माने ... लोग, बच्चे को जन्म देते हुए मर जाते हैं। भगवान हमारे सरपंच जी की रक्षा करें।'

Copyright © KATHA

जिश्नू ने तब संकल्प किया कि वह नहीं मरेगा।

जैसे–जैसे जिश्नू का पेट फूलने लगा वह अपने गाँव की स्त्रियों की ओर ध्यान देने लगा।

बहुत सारी स्त्रियाँ माँ बनने वाली थीं। जिश्नू, डॉक्टर की सलाह के मुताबिक, अच्छा भोजन करता और पूरा आराम भी करता। उसे तब एक अच्छी तरकीब सूझी।

‘‘,d lkefgd jlkb] ge lc ykx tk cPpk dk tUe nu okys g] ,d jlkb ls [kk,xA‘‘

‘‘हमारे बच्चें स्वस्थ होने चाहिये।

Copyright © KATHA

अब से वे सभी लोग जो संतान को जन्म देने वाले हैं, विकासपुर की सामूहिक रसोई में पका पौष्टिक खाना खाएंगे, ‘‘जिश्नू ने ऐलान किया

‘और व्रत उपवास अभी नहीं। पहले स्वस्थ बच्चा हो जाए, फिर कर लेना उपवास।’

महिला मण्डल के साथ मिलकर जिश्नू ने दाई कोष बनाया। दाई के लिए चन्दा जमा करते हुए वह बोला, ‘‘विकासपुर गाँव की कोई संतान अच्छी दाई–माँ की मदद के बिना नहीं पैदा होगी।’’

Copyright © KATHA

जिश्नू, जो पहले सूई लगवाने से डरता था, अब हिम्मत कर कई स्त्रियों के साथ टेटनेस का टीका भी लगवा आया।

Copyright © KATHA

उस साल विकासपुर गाँव के सभी बच्चे जीवित और स्वस्थ पैदा हुए। अखबारों में भी यह खबर छपी। जिश्नू सरपंच का नाम देशभर में प्रसिद्ध हुआ।

Copyright © KATHA

आखिर जिश्नू की भी बारी आई। 'ऊआँ ऊँ आँ ...' बच्चे की आवाज़ गूँज उठी।

'मैं माँ ... मेरा मतलब बापू।' जिश्नू बोला, 'कैसा है मेरा बेटा?'

''बेटा नहीं ...'' डॉक्टर बोलीं ''तुम्हारी बिटिया।''

जिश्नू चौंक गया। सूर्य देव ने उसे धोखा दिया?

Copyright © KATHA

''हम उस सूर्य देव को ढूँढ कर लाएंगे' और तुम्हे बेटा दिलवाऐंगे'' पंचायत वाले बोले।

जिश्नू ने उनकी ओर देखा। सोचा, अगर वाकई इन्हें सूर्य देव मिल जाए तो? और अगर उसे फिर से बच्चे को जन्म देना पड़े तो? ना! बाबा ना!

''बेटा हो या बेटी, क्या फ़र्क है?'' जिश्नू सरपंच ज़ोर से बोला। ''देवता अगर और दें भी तो ज़्यादा किसे चाहिए?''

वह रानू की ओर देखकर मुस्कुराया। रानू भी खुश होकर मुस्कुराने लगी।

Copyright © KATHA

xhrk /kejktu बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय* की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

vrq jk; ने सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन किया है। उन्होंने अपना अधिकतर समय कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि *इंडिया टुडे* में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कईं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे *चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन* और इब्बी *सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनर फ़ॉर इलस्ट्रेशन।*

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

क्या तुमने कभी किसी मर्द को बच्चे को जन्म देते हुए देखा या सुना है? विकासपुर गाँव के एक सरपंच जिश्नू की यह अजब गजब कहानी कुछ ऐसी ही है। सूर्य देव से एक बेटे की इच्छा करने वाले जिश्नू के साथ क्या हुआ? और इस घटना के कारण गाँव में क्या-क्या बदलाव आते हैं, आइऐ जानते हैं।

Copyright © KATHA